Sign in to edit and save changes to this file.

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

अमित शाह के नए मंत्रालय में मिल रहा जॉब 12
आगरा विवि दीक्षांत समारोह: डरें नहीं और नेगेटिव... 10

जन एक्सप्रेस

लखनऊ
वर्ष: 13 | अंक: 71
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ | बुधवार | 22 दिसंबर, 2021

बकरी–मुर्गी पालन से किसानों की आर्थिक स्थिति हो सकती है सुदृढ़

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के प्रसार निदेशालय में पशुपालन एवं उनके स्वास्थ्य एवं पशुपालकों की आय बढ़ाने पर केंद्रित दो दिवसीय वैज्ञानिक कार्य क्षमता विकास प्रशिक्षण के समापन अवसर पर मंगलवार को प्रो. डॉ. डी. डी. यादव ने दुग्ध उत्पादन के लिए चारा उत्पादन तकनीक विषय पर जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सूखा चारा का अनुपात 3:1 होना चाहिए तथा हरा चारा पर्याप्त मात्रा में होने पर 6 से 7 लीटर दूध देने वाली गाय को अतिरिक्त दाना नहीं देना चाहिए। विश्वविद्यालय के निदेशक शोध डॉ. एच. जी. प्रकाश ने डेयरी इकाई स्थापित करने एवं उसके प्रबंधन विषय पर जानकारी देते हुए बताया कि डेयरी उद्योग लगाने के लिए अच्छी तरह से हवादार और विशाल शेड तथा एक गाय के लिए 8×12 फीट क्षेत्र की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि डेयरी के लिए स्थान का चुनाव करते समय ध्यान रखना चाहिए कि स्थान ऊंचा हो और पानी न भरता हो अच्छी तरह से धूप और हवा का आदान-प्रदान हो। प्रोफेसर डॉ. राम जी गुप्ता ने बकरी और मुर्गी पालन इकाई के बारे में बताते हुए कहा कि जनसंख्या की अधिकता के कारण प्रति व्यक्ति किसान की खेती योग्य भूमि काफी कम हो चुकी है।

ऐसी स्थिति में बकरी और मुर्गी पालन से किसानों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सकती है। उन्होंने कहा कि किसान बकरी व मुर्गियों को सस्ते दामों में खरीदकर कम खर्च में अपनी आजीविका चला सकते हैं। इस अवसर पर प्रसार समन्वयक डॉ. अरविंद कुमार सिंह ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए।

कार्यक्रम में डॉ. पी. के. राठी, डॉ. अनिल कुमार सिंह, डॉ. सोहन लाल वर्मा सहित अन्य अधिकारी एवं वैज्ञानिक मौजूद रहे।

राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • बुधवार • 22 दिसम्बर • 2021

बकरी पालन के बताये लाभ

सीएसए में हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम में किसानों को जानकारी देते वक्ता। फोटो : एसएनबी

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के प्रसार निदेशालय में पशुपालन पर केन्द्रित दो दिवसीय वैज्ञानिक कार्य क्षमता विकास कार्यशाला मंगलवार को संपन्न हुआ। इस अवसर पर किसानों व कम भूमि वाले लोगों को आय वृद्धि के लिए पशुपालन के लिए प्रोत्साहित करने पर जोर दिया गया। गाय, भैंस, वकरी व मुर्गी पालन के विभिन्न पहलुओं पर वैज्ञानिकों-शोधार्थियों को प्रशिक्षित किया गया। वकरी को उसके गुणों के कारण गरीवों का गाय वताया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में सीएसए का किसानों की आय वृद्धि के लिए पशुपालन पर जोर

प्रोफेसर डॉ.डीडी यादव ने दुग्ध उत्पादन हेतु चारा उत्पादन तकनीक से अवगत कराया। विवि के निदेशक शोध डॉ.एचजी प्रकाश ने डेयरी इकाई स्थापना व उसके प्रवंधन के वारे में जानकारी दी। प्रोफेसर डॉ.रामजी गुप्ता ने वकरी व मुर्गी पालन पर प्रशिक्षित किया। उन्होंने कहा कि किसान वकरी व मुर्गियों को सस्ते दामों में खरीदकर कम खर्च में अपनी जीविका चला सकते हैं। हमारे देश में 15 से 20 प्रतिशत ग्रामीण जनता वकरी पालन पर निर्भर है। प्रसार समन्वयक डॉ.अरविंद कुमार सिंह ने समापन पर सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किये। डॉ.एसवी पाल व डॉ.सुभाष चन्द्रा के पर्यवेक्षण में संपन्न कार्यशाला में डॉ.पीके राठी, डॉ.अनिल कुमार सिंह, डॉ.सोहनलाल वर्मा सहित अन्य अधिकारियों-वैज्ञानिकों ने भागीदारी की।

WORLD खबर EXPRESS
WORLD खबर एक्सप्रेस
कानपुर
21/12/2021

सीएसए में दो दिवसीय कृषि वैज्ञानिकों के प्रशिक्षण का समापन

डेयरी इकाई लगाने के प्रबंधन की दी जानकारी

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के प्रसार निदेशालय में पशुपालन, उनके स्वास्थ्य एवं पशुपालकों की आय बढ़ाने पर केंद्रित दो दिवसीय वैज्ञानिक कार्य क्षमता विकास प्रशिक्षण के समापन अवसर पर प्रोफेसर डॉ. डीडी यादव ने दुग्ध उत्पादन के लिए चारा उत्पादन तकनीक विषय पर विस्तार से जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि सूखा चारा का अनुपात 3:1 होना चाहिए, यदि हरा चारा पशुपालक के पास पर्याप्त मात्रा में हो तो 6 से 7 लीटर दूध देने वाली गाय को अतिरिक्त दाना नहीं देना चाहिए। उन्होंने बताया कि इससे अधिक दूध देने वाली दुधारू पशुओं को तीन लीटर दूध पर एक किलोग्राम दाना गाय को, ढाई लीटर दूध देने पर एक किलोग्राम दाना भैंस को देना चाहिए। विश्वविद्यालय के निदेशक शोध डॉ. एचजी प्रकाश ने डेयरी इकाई स्थापित करना व उसके प्रबंधन विषय पर जानकारी दी। उन्होंने बताया कि डेयरी उद्योग लगाने के लिए अच्छी तरह से हवादार और विशाल शेड की आवश्यकता होती है। एक गाय के लिए 8×12 फीट क्षेत्र की आवश्यकता होती है। 15 गायों के लिए 120 ×12 फीट स्थान की जरूरत होती है। डेयरी के लिए स्थान का चुनाव करते समय ध्यान रखना चाहिए कि स्थान हमेशा ऊंचा होना चाहिए जहां पानी न भरता हो, अच्छी तरह से धूप और हवा का आदान-प्रदान हो। साथ ही जलापूर्ति, विद्युत आपूर्ति भी सही हो और गाय-भैंसों के उत्तम नस्लों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। प्रोफेसर डॉ. राम जी गुप्ता ने बकरी और मुर्गी पालन इकाई के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि जनसंख्या की अधिकता के कारण प्रति व्यक्ति किसान की खेती योग्य भूमि काफी कम हो चुकी है। ऐसी स्थिति में बकरी और मुर्गी पालन से किसानों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सकती है। उन्होंने कहा कि किसान बकरी व मुर्गियों को सस्ते दामों में खरीदकर कम खर्च में अपनी आजीविका चला सकते हैं। हमारे देश में 15 से 20 फीसदी ग्रामीण बकरी पालन पर निर्भर है। उन्होंने कहा कि बकरी को उसके गुणों के कारण गरीबों की गाय कहा जाता है। प्रसार समन्वयक डॉ. अरविंद कुमार सिंह ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए। कार्यक्रम का संचालन प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. एसबी पाल ने किया। धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. सुभाष चंद्रा ने किया। इस अवसर पर डॉ. पीके राठी, डॉ. अनिल कुमार सिंह आदि रहे।

आधुनिक तकनीक

सीएसए संग मिलकर आइआइटी के विज्ञानी बना रहे खास रोबोट, किसानों को मिलेगा फायदा

रोबोट बताएगा फसलों की बीमारी व मिट्टी की सेहत

दैनिक जागरण कानपुर 22/12/2021

चंद्रप्रकाश गुप्ता • कानपुर

फसलों में बीमारी और मिट्टी के पोषक तत्वों का पता लगाने को आइआइटी के सहयोग से चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसएस) के विज्ञानियों ने विशेष रोबोट तैयार करना शुरू किया है। खेत में रोबोट को रिमोट के जरिए चलाया जाएगा और उसमें मौजूद सेंसर प्रणाली विभिन्न मानकों पर मिट्टी व फसलों की जांच कर सकेगी। ट्रायल के बाद अगले दो माह में इस रोबोट को लांच करने की तैयारी है। इसके बाद किसान भी इस तकनीक का फायदा उठा सकेंगे।

सीएसए के कुलपति डा. डीआर सिंह ने बताया कि अलग-अलग वातावरण में फसलों में कई तरह की बीमारियां होने की आशंका रहती है। उसमें विभिन्न रसायनों का छिड़काव करना पड़ता है, लेकिन किस फसल में कौन सी बीमारी कब लगने वाली है, इसकी जानकारी होने में समय लगता है।

आइआइटी बना रहा विशेष रोबोट • जागरण

इसी समस्या को लेकर आइआइटी की मदद से सेंसर प्रणाली पर आधारित एक रोबोट का निर्माण कराया जा रहा है। रोबोट में लगे सेंसर खेत में मिट्टी के कणों में मौजूद नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम, कार्बनिक कार्बन, कैटियन एक्सचेंज कैपेसिटी आदि पोषक तत्वों की मात्रा का पता लगा सकेंगे। पौधे व पत्तियों की फोटो खींचकर उसके आधार पर बीमारी का पूर्वानुमान लगा सकेंगे। इससे किसानों को समय से पहले ही सतर्क होकर फसलों में बीमारी को रोकने में मदद मिलेगी। वे पूर्व से ही संबंधित दवा का छिड़काव व अन्य उपाय अपना सकेंगे। अभी आइआइटी की ओर से रोबोट का ट्रायल चल रहा है।

रिमोट से संचालित होगा रोबोट:. आइआइटी की ओर से दो तरह के रोबोट बनाए जा रहे हैं। एक रोबोट की ऊंचाई करीब डेढ़ फीट है और दूसरे की तीन से चार फीट होगी। संयुक्त निदेशक शोध डा. एसके बिश्वास ने बताया कि रिमोट से इन रोबोट को खेत के विभिन्न हिस्से में चलाया जा सकेगा। जिन खेतों में पौधे लाइन में लगे होते हैं, उनमें रोबोट को आसानी से चलाया जा सकता है, लेकिन जिन खेतों में पौधे लाइन में नहीं होते, उनमें मेड़ पर चलाया जाएगा।

आम किसानों को मिलेगी मदद

कुलपति डा. डीआर सिंह ने बताया कि रोबोट कृषि के संवर्धन और सुरक्षा के लिए काफी उपयोगी साबित होगा। वर्तमान में किसानों को अपनी फसल में बीमारी होने का पता तब लगता है, जब पांच से 10 प्रतिशत फसल खराब हो चुकी होती है। विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों के विज्ञानी अपने क्षेत्रों में रोबोट की मदद से विभिन्न किसानों के खेतों की जांच कर सकेंगे और बीमारी का पूर्वानुमान लगा सकेंगे।

दो दिवसीय कृषि वैज्ञानिकों के प्रशिक्षण का हुआ समापन

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुरः चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के प्रसार निदेशालय में पशुपालन एवं उनके स्वास्थ्य एवं पशुपालकों की आय बढ़ाने पर केंद्रित दो दिवसीय वैज्ञानिक कार्य क्षमता विकास प्रशिक्षण के समापन अवसर एवं दूसरे दिन प्रोफेसर डॉक्टर डी डी यादव ने दुग्ध उत्पादन हेतु चारा उत्पादन तकनीक विषय पर विस्तार से जानकारी दी उन्होंने बताया कि सूखा चारा का अनुपात 3:1 होना चाहिए यदि हरा चारा पशुपालक के पास पर्याप्त मात्रा में हो तो 6 से 7 लीटर दूध देने वाली गाय को अतिरिक्त दाना नहीं देना चाहिए उन्होंने बताया कि इससे अधिक दूध देने वाली दुधारू पशुओं को 3 लीटर दूध पर एक किलोग्राम दाना गाय को,ढाई लीटर दूध देने पर एक किलोग्राम दाना भैंस को देना चाहिए। विश्वविद्यालय के निदेशक शोध डॉक्टर एचजी प्रकाश ने डेयरी इकाई स्थापित करना एवं उसके प्रबंधन विषय पर जानकारी दी उन्होंने बताया कि डेयरी उद्योग लगाने के लिए अच्छी तरह से हवादार और विशाल शेड की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि एक गाय के लिए 8•12 फीट क्षेत्र की आवश्यकता होती है।उन्होंने बताया कि 15 गायों के लिए 120 •12 फीट स्थान की जरूरत होती है। डॉ प्रकाश ने कहा कि डेयरी हेतु स्थान का चुनाव करते समय ध्यान रखना चाहिए कि स्थान सदैव ऊंचा होना चाहिए जहां पानी न भरता हो अच्छी तरह से धूप और हवा का आदान–प्रदान हो।

साथ ही जलापूर्ति, विद्युत आपूर्ति भी सही हो तथा गाय भैंसों के उत्तम नस्लों पर विशेष ध्यान देना चाहिए प्रोफेसर डॉ राम जी गुप्ता ने बकरी और मुर्गी पालन इकाई के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि जनसंख्या की अधिकता के कारण प्रति व्यक्ति किसान की खेती योग्य भूमि काफी कम हो चुकी है ऐसी स्थिति में बकरी और मुर्गी पालन से किसानों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सकती है उन्होंने कहा कि किसान बकरी व मुर्गियों को सस्ते दामों में खरीदकर कम खर्च में अपनी आजीविका चला सकते हैं हमारे देश में 15 से 20: ग्रामीण जनता बकरी पालन पर निर्भर है उन्होंने कहा कि बकरी को उसके गुणों के कारण गरीबों की गाय कहा जाता है प्रसार समन्वयक डॉ अरविंद कुमार ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए कार्यक्रम का संचालन प्रशिक्षण समन्वयक डॉ एस बी पाल ने किया धन्यवाद प्रस्ताव डॉक्टर सुभाष चंद्रा ने किया इस अवसर पर डॉ पीके राठी, डॉक्टर अनिल कुमार सिंह, डॉक्टर सोहन लाल वर्मा सहित अन्य अधिकारी एवं वैज्ञानिक उपस्थित रहे।